

## ईरान-इजराइल संघर्ष: वैश्विक राजनीति में उभरता सामरिक संकट

डॉ. इंदु बघेल

सहायक प्राध्यापक, राजनीति विज्ञान विभाग भारती कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

### सारांश

समकालीन वैश्विक राजनीति में, ईरान और इजराइल के बीच चल रहा संघर्ष एक महत्वपूर्ण मुद्दा बनकर उभरा है, जो प्रत्यक्ष सैन्य टकराव में परिवर्तित हो रहा है। यह अध्ययन चल रहे युद्ध के कारणों, प्रकृति और प्रभावों की जांच करने के लिए किया गया है। यह अप्रत्यक्ष टकराव से सैन्य टकराव में परिवर्तन को उजागर करता है। इसके बाद यह वैश्विक ऊर्जा बाजारों, अंतरराष्ट्रीय व्यापार मार्गों और भू-राजनीतिक गठबंधनों पर इसके परिणामों का मूल्यांकन करता है। यह अंतरराष्ट्रीय शांति और सुरक्षा के लिए एक चुनौती है। यह कुछ भविष्य की परिस्थितियों का भी सुझाव देता है जिन पर हमें ध्यान देना चाहिए। यह आगे की अस्थिरता को रोकने के लिए वैश्विक सहयोग की तत्काल आवश्यकता पर जोर देता है।

**मूल शब्द:** मध्य पूर्व भू-राजनीति, प्रत्यक्ष सैन्य टकराव, मानवीय संकट एवं ईरान-इजराइल संघर्ष

### प्रस्तावना

ईरान और इजराइल के बीच चल रहा संघर्ष समकालीन वैश्विक राजनीति के सबसे गंभीर संकटों में से एक बनकर उभरा है। शुरुआत में, दुनिया ने इस संघर्ष को एक विस्तारित "छाया युद्ध" कहा, जिसमें परोक्ष युद्ध, गुप्त अभियान और रणनीतिक प्रतिरोध शामिल थे, जो अब एक प्रत्यक्ष और बड़े पैमाने पर सैन्य टकराव में बदल गया है। 2026 के अंत में हुई घटनाएं एक महत्वपूर्ण मोड़ हैं, जिन्होंने दोनों देशों (ईरान-इजराइल) के बीच एक नए संघर्ष को जन्म दिया है। इन घटनाओं ने क्षेत्रीय अस्थिरता को बढ़ा दिया है और प्रमुख वैश्विक शक्तियों, विशेष रूप से संयुक्त राज्य अमेरिका को इसमें शामिल कर लिया है।

वर्तमान संघर्ष की जड़ें ऐतिहासिक, वैचारिक और भू-राजनीतिक तनावों में गहरी हैं, विशेष रूप से ईरानी क्रांति के बाद, जिसने ईरान की विदेश नीति को पुनर्गठित किया और उसे यह मानने पर मजबूर किया कि इजराइल उसका प्रतिद्वंद्वी है। वर्षों से, ईरान के परमाणु कार्यक्रम, उसके बढ़ते क्षेत्रीय प्रभाव और इजराइल की सुरक्षा चिंताओं को लेकर विवाद होते रहे हैं, जिससे वर्तमान तनाव में बदलाव आया है। संयुक्त व्यापक कार्य योजना सहित राजनयिक प्रयास, स्थायी स्थिरता स्थापित करने में विफल रहे हैं, बल्कि ईरान और इजराइल तथा विश्व भर के लोगों के बीच अविश्वास और टकराव को बढ़ावा देकर स्थिति को और अधिक तीव्र कर रहे हैं।

वर्तमान संघर्ष की शुरुआत फरवरी 2026 में सैन्य अभियानों से हुई, जब संयुक्त हमलों ने ईरानी सैन्य बुनियादी ढांचे को निशाना बनाया, जिसके परिणामस्वरूप मध्य पूर्व में मिसाइल और ड्रोन हमलों के माध्यम से जवाबी कार्रवाई हुई। इस संकट के कारण जानमाल का नुकसान, बुनियादी ढांचे का व्यापक विनाश, वैश्विक व्यापार और ऊर्जा आपूर्ति श्रृंखला में व्यवधान उत्पन्न हुआ है। कुछ क्षेत्र रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण हैं, जैसे कि होर्मुज जलडमरूमध्य जिससे होकर विश्व के तेल आपूर्ति का सबसे बड़ा हिस्सा गुजरता है, जिसने वैश्विक आर्थिक स्थिरता के खतरे को और बढ़ा दिया है।

साथ ही, यह संघर्ष क्षेत्रीय सीमाओं को पार कर गया है और इसे वैश्विक भू-राजनीति से संबंधित मुद्दा बना दिया है। इससे शक्ति प्रतिस्पर्धा की चिंताएं बढ़ गई हैं और गठबंधनों का स्वरूप बदल गया है, जिससे युद्ध की संभावना बनी हुई है। राजनयिक प्रयासों की तत्काल आवश्यकता है, जिन पर जोर दिया जाना चाहिए। यह अध्ययन ईरान-इजराइल युद्ध के कारणों, प्रकृति और प्रभावों

का विश्लेषण करता है, जो वैश्विक राजनीति और अंतरराष्ट्रीय संबंधों में एक बढ़ता हुआ संकट है।

### संघर्षों की पृष्ठभूमि

ईरान और इजराइल के बीच संघर्ष का एक लंबा और जटिल इतिहास है। ईरान और इजराइल दरअसल 1948 में इजराइल के एक देश बनने के समय मित्र थे। उस समय, ईरान एक राजशाही था और उसने इजराइल को मान्यता दी थी। उन्होंने आर्थिक और रणनीति जैसे मामलों पर मिलकर काम भी किया था। 1979 की ईरानी क्रांति के बाद सब कुछ बदल गया।

ईरानी क्रांति ने ईरान को एक गणतंत्र बना दिया। इसने इजराइल का कड़ा विरोध करना शुरू कर दिया। ईरान के नए नेता इजराइल को मान्यता नहीं देना चाहते थे। उनका मानना था कि इजराइल का अस्तित्व नहीं होना चाहिए। इससे दोनों देशों के बीच संघर्ष की शुरुआत हुई। तब से, यह संघर्ष केवल राजनीति तक ही सीमित नहीं रहा, बल्कि विचारधारा से भी जुड़ा हुआ था, जिसमें दोनों पक्ष एक-दूसरे को एक बड़ा खतरा मानते थे।

समय के साथ, ईरान और इजराइल के बीच संघर्ष और भी बढ़ा और जटिल होता गया। ईरान ने लेबनान में हिज्बुल्लाह और फिलिस्तीन में हमास जैसे समूहों का समर्थन करना शुरू कर दिया, जो इजराइल के खिलाफ लड़ रहे थे। इजराइल ने इन समूहों पर हमला करके और सीरिया जैसे देशों में ईरान के प्रभाव को सीमित करने की कोशिश करके जवाब दिया। यह युद्ध को बढ़ावा दिए बिना लड़ने का एक तरीका था, जिसके परिणामस्वरूप कई वर्षों तक उच्च तनाव बना रहा।

संघर्ष का एक और महत्वपूर्ण कारण ईरान का कार्यक्रम है। इजराइल इस बात से बेहद चिंतित है कि ईरान उन हथियारों को मान्यता देता है जिन्हें वह अपनी सुरक्षा के लिए खतरा मानता है। ईरान की गतिविधियों को नियंत्रित करने के लिए संयुक्त व्यापक कार्य योजना जैसे प्रयास किए गए हैं। हालांकि, ये प्रयास बहुत सफल नहीं रहे हैं, जिससे दोनों पक्षों के बीच विश्वास और कम हो गया है।

ईरान और इजराइल मध्य पूर्व में सबसे प्रभावशाली देश बनने की होड़ में भी हैं। ईरान का लक्ष्य इराक, सीरिया और लेबनान जैसे देशों में अपनी शक्ति का प्रदर्शन करना है, जबकि इजराइल अपनी स्थिति बनाए रखने के लिए इसे रोकने का प्रयास करता है।

इस प्रतिस्पर्धा ने समय के साथ संघर्ष को और बढ़ा दिया है। ईरान और इजराइल के बीच संघर्ष कई कारकों का परिणाम है, जिनमें ऐतिहासिक घटनाएँ, वैचारिक मतभेद, परोक्ष युद्ध, परमाणु तनाव और क्षेत्र में सत्ता संघर्ष शामिल हैं, इन सभी ने दोनों के बीच वर्तमान संकट को जन्म दिया है।

### 2026 में ईरान और इजराइल के बीच युद्ध

2026 में ईरान और इजराइल के बीच युद्ध की शुरुआत लड़ाई में हुई वृद्धि के कारण हुई।

इससे ईरान और इजराइल के बीच तनाव एक पूर्ण युद्ध में तब्दील हो गया। 2026 की शुरुआत में, ईरान पर कई हवाई हमले हुए। ये हवाई हमले महत्वपूर्ण थे, जिनमें ईरान के महत्वपूर्ण ठिकानों को निशाना बनाया गया था।

इन हमलों का उद्देश्य ईरान की सेना को कमजोर करना और उसकी क्षेत्रीय गतिविधियों को सीमित करना था। ईरान ने इन हवाई हमलों को अपनी संप्रभुता और सुरक्षा पर हमला माना। नुकसान व्यापक था और ईरान की सेना को भारी क्षति हुई। इससे ईरान के नेताओं पर जवाबी कार्रवाई करने का भारी दबाव पड़ा। परिणामस्वरूप, स्थिति तेजी से बिगड़ गई। स्थिति को और भी बदतर बनाने वाली बात यह थी कि ईरान और इजराइल के बीच सीधा युद्ध शुरू हो गया। पहले वे अप्रत्यक्ष रूप से लड़ रहे थे। अब वे सीधे टकराव में शामिल हो गए थे।

लड़ाई रोकने के लिए कूटनीति का सहारा लिया गया, लेकिन वे अप्रभावी रहे।

दोनों पक्षों ने बातचीत के बजाय टकराव को प्राथमिकता दी। इसलिए, ईरान और इजराइल के बीच 2026 का युद्ध ईरान पर हुए हवाई हमलों के परिणामस्वरूप शुरू हुआ, जिसके कारण ईरान ने जवाबी कार्रवाई की। अंततः, यह दोनों देशों के बीच युद्ध में तब्दील हो गया। 2026 का युद्ध महत्वपूर्ण था, क्योंकि इसकी शुरुआत ईरान पर हुए उन हवाई हमलों से हुई थी।

### ईरान की प्रतिक्रिया

ईरान ने इजराइल और उसके सहयोगियों के हमलों पर त्वरित और जोरदार प्रतिक्रिया दी। उन्होंने अपनी ताकत और रणनीतिक योजना दोनों का प्रदर्शन किया। उन्होंने विभिन्न ठिकानों पर मिसाइल और ड्रोन हमले किए सैकड़ों मिसाइलें और ड्रोन शहरों, सैन्य ठिकानों और महत्वपूर्ण स्थानों पर दागे गए। कुछ मिसाइलें इजराइल की रक्षा प्रणालियों को भेदते हुए आगे निकल गईं, जिससे नुकसान हुआ और लोग घायल हुए।

इजराइल को निशाना बनाने के अलावा, ईरान ने खाड़ी में अमेरिकी ठिकानों और सहयोगी देशों के ठिकानों पर भी हमला किया। इससे यह संकेत मिला कि संघर्ष अब केवल दो देशों के बीच का नहीं रह गया था, बल्कि एक बड़े क्षेत्रीय संकट में बदल गया था।

ईरान ने इजराइल की रक्षा प्रणालियों को नाकाम करने के लिए ड्रोन जैसे हथियारों का इस्तेमाल किया। इससे उन्हें अपनी सेनाओं के कमजोर होने के बावजूद अपने विरोधियों पर दबाव बनाए रखने में मदद मिली। ईरान ने इजराइल को निशाना बनाने के लिए ड्रोन का इस्तेमाल किया।

ईरान ने इजराइल पर विभिन्न दिशाओं से रक्षात्मक हमले करने के लिए हिज्बुल्लाह जैसे सहयोगियों और प्रॉक्सी समूहों के साथ मिलकर काम किया।

इससे संघर्ष और बढ़ गया, जिससे इसे संभालना और भी मुश्किल हो गया।

कूटनीतिक मोर्चे पर, ईरान ने कड़ा रुख अपनाते हुए शांति प्रस्तावों को खारिज कर दिया और अपने परमाणु और मिसाइल कार्यक्रमों को जारी रखने पर अड़ा रहा।

उन्होंने होर्मुज जलडमरूमध्य जैसे तेल मार्गों को बाधित करने की भी धमकी दी, जिससे अर्थव्यवस्था पर दबाव पड़ा।

कुल मिलाकर, ईरान की प्रतिक्रिया क्षेत्रीय संघर्ष को बढ़ाने वाली कार्रवाइयों और रणनीतिक राजनीतिक अवज्ञा का मिश्रण थी। इससे युद्ध और भी गंभीर हो गया और एक अंतरराष्ट्रीय संकट में बदल गया। ईरान की कार्रवाइयों ने ईरान और इजराइल के बीच तनाव को और बढ़ा दिया। ईरान और इजराइल के बीच संघर्ष आज भी एक गंभीर मुद्दा बना हुआ है। ईरान और इजराइल एक-दूसरे से प्रतिस्पर्धा करते रहते हैं और स्थिति अभी भी बेहद तनावपूर्ण है।

### प्रमुख घटनाक्रम

ईरान-इजराइल का टकराव एक लंबा चला आ रहा विवाद है। यह कोई खुला युद्ध नहीं है, लेकिन तनाव इतना बढ़ गया है कि कभी-कभी यह हमलों में बदल जाता है। यह समस्या मुख्य रूप से राजनीतिक, धार्मिक और रणनीतिक दृष्टिकोण की कमी के कारण है। 1979 के इस्लामिक क्रांति के बाद, ईरान ने इजराइल को एक देश के रूप में मानना बंद कर दिया और उसके खिलाफ मजबूती से खड़ा हो गया। ईरान का कहना है कि इजराइल की नीतियां फिलिस्तीनियों के प्रति गलत हैं। दूसरी ओर, इजराइल मानता है कि ईरान सबसे बड़ा खतरा है, खासकर उसकी सेना की शक्ति और न्यूक्लियर कार्यक्रम के कारण। ईरान का न्यूक्लियर कार्यक्रम इस टकराव का एक बड़ा मुद्दा है। ईरान दावा करता है कि उसका कार्यक्रम शांतिपूर्ण है, जैसे कि ऊर्जा पैदा करना। फिर भी, इजराइल को लगता है कि ईरान न्यूक्लियर हथियार बनाने की कोशिश कर रहा है। अगर ईरान ऐसा करता है, तो इजराइल के अस्तित्व को खतरा हो सकता है। इसीलिए, इजराइल ने ईरान की न्यूक्लियर गतिविधियों को रोकने के लिए साइबर हमले और तोड़फोड़ जैसे गुप्त ऑपरेशन किए हैं। प्रॉक्सी युद्ध एक और बड़ा पहलू है। इसका मतलब है कि ईरान हमेशा सीधे इजराइल के खिलाफ लड़ाई नहीं लड़ता, बल्कि अपनी तरफ से लड़ने के लिए दूसरे समूहों को मदद देता है। लेबनान में हिज्बुल्लाह और गाजा में हमस दो महत्वपूर्ण समूह हैं। ये समूह इजराइल पर रॉकेट और मिसाइलें दागते हैं। इजराइल इनका जवाब एयरस्ट्राइक और सैन्य कार्रवाई से देता है। सीरिया की स्थिति ने भी तनाव को बढ़ा दिया है। ईरान ने सीरिया में सैनिक तैनात किए हैं, और इजराइल ने कई बार इन स्थानों पर हमला किया है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि ईरान उसके सीमा क्षेत्र में और न घुसे। ऐसे हमले लड़ाई के जोखिम को बढ़ाते हैं क्योंकि इनमें बड़ी लड़ाइयों की संभावनाएं होती हैं। इस टकराव में तकनीक का भी इस्तेमाल हो रहा है। साइबर हमले विभिन्न देशों की प्रणालियों को, जैसे बिजली, पानी की सप्लाई और सरकारी सेवाएं, बाधित करने के लिए किए जाते हैं। ये हमले आमतौर पर नजर नहीं आते, फिर भी इनकी संख्या अधिक है। हाल के वर्षों में ड्रोन और मिसाइल हमले बढ़े हैं। कई मामलों में, हमले सीधे नहीं होते, और दोनों पक्ष पूरी जिम्मेदारी से लड़ाई को टालने की कोशिश करते हैं। फिर भी, ऐसे मामलों से तनाव और डर बढ़ता है। इसमें बड़े देश भी शामिल हैं। इजराइल को अमेरिका का समर्थन प्राप्त है, और ईरान के रूस के साथ अच्छे संबंध हैं। निवेश से दूर रहना और भी अस्थिरता को जन्म दे सकता है और यह एक अंतरराष्ट्रीय विवाद बन सकता है। दूसरे शब्दों में, ईरान-इजराइल का यह विवाद केवल एक राजनीतिक झगड़ा नहीं है; यह एक गंभीर सैन्य और रणनीतिक समस्या है। यह स्थिति ईरानियों के लिए अधिक खतरनाक बन रही

## वैश्विक प्रभाव

ईरान-इजराइल का युद्ध केवल इन दो देशों की समस्या नहीं है; यह पूरी दुनिया के लिए चिंता का विषय है। मिडिल ईस्ट की राजनीति और तेल की आपूर्ति के लिए यह क्षेत्र बेहद महत्वपूर्ण है। इसका मुख्य परिणाम बड़े युद्ध का खतरा है। यदि ईरान और इजराइल सीधी लड़ाई शुरू करते हैं, तो अमेरिका और रूस जैसी अन्य सुपरपावर इसमें हस्तक्षेप कर सकती हैं। यह एक बड़ा अंतरराष्ट्रीय संघर्ष बन जाएगा, जो दुनिया की शांति के लिए जोखिम पैदा करेगा।

दूसरा प्रभाव आपसी सुरक्षा की समझ पर पड़ता है। ईरान एक सुरक्षा देने वाले गुट का हिस्सा है, जैसे हिज्बुल्लाह और हमास, जो अन्य क्षेत्रों में हमलों को बढ़ावा दे सकते हैं। इजराइल के पास सुरक्षा खुफिया और रक्षा तंत्र हैं, जिनका उपयोग वह अपनी सुरक्षा सुनिश्चित करने और कभी-कभी अपने दुश्मनों पर हमले के लिए करता है। संयुक्त राष्ट्र जैसी अंतरराष्ट्रीय एजेंसियां हालात को नियंत्रित करने और शांति बढ़ाने की कोशिश करती हैं। हालांकि, वे अक्सर असफल होती हैं, क्योंकि देशों की राय और स्वार्थ अलग-अलग होते हैं।

युद्ध ने देशों के बीच दोस्ती में बदलाव किया है। दूसरे अरब देश, इजराइल, और वे अरब देश जो इजराइल का मजबूत समर्थन नहीं करते थे, अब ईरान के समर्थन की संभावना के कारण उसकी तरफ और अधिक रुख कर रहे हैं। इसने मिडिल ईस्ट के राजनीतिक नक्शे को बदल दिया है। व्यापार भी इससे प्रभावित हुआ है। मिडिल ईस्ट में मौजूद समुद्री रास्ते, जैसे होर्मुज की खाड़ी, जिनसे बड़ी मात्रा में तेल बहता है। जब लड़ाई बढ़ती है, तो यह वैश्विक व्यापार को और अधिक रोक सकती है, क्योंकि कहा जाता है कि संघर्ष बढ़ने पर जहाज सुरक्षित यात्रा नहीं कर सकते।

एक और समस्या साइबर सुरक्षा है। ईरान और इजराइल के पास शक्तिशाली साइबर क्षमताएं हैं और वे महत्वपूर्ण सिस्टम को निशाना बना सकते हैं। ऐसे हमले न केवल इन देशों पर असर डालते हैं, बल्कि तकनीक से जुड़े अन्य देशों पर भी प्रभाव डालते हैं। देशों को इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि वे कौन से कदम उठाते हैं, क्योंकि इससे उनके रिश्तों पर असर पड़ सकता है।

यह स्पष्ट है कि इजराइल के साथ टकराव का कारण दुनिया भर में सुरक्षा, राजनीतिक, और टेक्नोलॉजिकल संकट है। यह एक स्थानीय आर्थिक समस्या नहीं है; यह एक वैश्विक समस्या है।

## 1. आर्थिक प्रभाव

ईरान-इजराइल युद्ध का असर ज्यादातर देशों की अर्थव्यवस्था पर बहुत बड़ा होता है। इसका सबसे बड़ा प्रभाव तेल की कीमतों पर पड़ता है। दुनिया में सबसे ज्यादा तेल उत्पादन करने वाला क्षेत्र मिडिल ईस्ट है। जब वहां तनाव होता है, तो समझौतों की वजह से तेल की कीमतें बढ़ जाती हैं। सप्लाई भी प्रभावित हो सकती है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि होर्मुज स्ट्रेट बहुत जरूरी है, क्योंकि दुनिया का अधिकतर तेल यहीं से गुजरता है। इस क्षेत्र में और इसके आस-पास लड़ाई होने पर तेल की सप्लाई रुक सकती है। इसका असर फ्यूल की लागत में वृद्धि के रूप में होता है। दो ध्रुवों वाले देश ध्रुवों में बंट जाते हैं क्योंकि भारत को तेल की कीमतों में बढ़ोतरी से चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। फ्यूल की कीमतों में वृद्धि से चीजों और सेवाओं की कीमतें बढ़ जाती हैं। इससे लोगों में चिढ़ होती है, और आम जनता भी प्रभावित होती है। बिजनेस पर भी असर पड़ता है। फ्यूल की कीमतों में वृद्धि से ट्रांसपोर्टेशन और प्रोडक्शन की लागत बढ़ जाती है। इससे मुनाफा कम होता है और नौकरियां जा सकती हैं।

इसलिए, वैश्विक व्यापार प्रभावित होता है। युद्ध से डर और असुरक्षा बढ़ती है। इसलिए, कार्गो वैन को बाधित किया जाता है, और लोगों को मंजिल पर भेजा जाता है। कार्गो बढ़ता है और उस पर खतरा मंडराता है, जिससे देरी और खर्च बढ़ सकते हैं। ईरान पर लगे बैन की वजह से भी अर्थव्यवस्था को नुकसान हो सकता है। अमेरिका ने दुनिया भर में ईरानी व्यापार, खासकर ईरान के तेल पर सीमाएँ लगा दी हैं। इससे ईरान की अर्थव्यवस्था और वैश्विक कीमतों को नुकसान होता है। तेल की सप्लाई पर भी असर पड़ता है, जिससे कीमतें बढ़ती हैं। इजराइल की अर्थव्यवस्था पर भी असर पड़ता है। लड़ाई के दौरान टूरिज्म घट जाता है क्योंकि लोग असुरक्षित जगहों पर जाना पसंद नहीं करते। विदेशी निवेश भी गिर सकता है। स्टॉक मार्केट इस प्रकार के दबावों का शिकार होता है। निवेशक अपनी संपत्ति को सुरक्षित निवेश की ओर मोड़ देते हैं, जिससे पुराने निवेश अस्थिर हो जाते हैं। इससे वित्तीय बाजार में अस्थिरता आती है।

क्षेत्र की सह-विकास में सेना भी विकास से ज्यादा पैसा खर्च करती है। इसका असर भविष्य की वृद्धि और व्यापार पर पड़ता है। सरल भाषा में कहें तो, युद्ध, आर्थिक कीमतें और राजनीतिक मुद्दे वैश्विक आर्थिक मुद्दे बन जाते हैं। ईरान-इजराइल युद्ध की राजनीति ने दुनिया और क्षेत्र की राजनीति पर बड़ा असर डाला है। इससे गठबंधनों, राजनीति, और शक्ति संतुलन में बदलाव आया है। इस लड़ाई ने मध्य पूर्व में विभाजन पैदा कर दिया है। देश अपने रणनीतिक फायदों, सुरक्षा मामलों और राजनीतिक दृष्टिकोण के आधार पर या तो इजराइल का साथ दे रहे हैं या ईरान का।

## 2. राजनीतिक प्रभाव

इजराइल अब्राहम अकॉर्ड्स जैसे समझौतों के तहत विभिन्न अरब देशों के साथ अपने कूटनीतिक रिश्ते मजबूत कर रहा है। ये डील मध्य पूर्व की राजनीति में बड़ा बदलाव लाती हैं। सऊदी अरब, जो पहले इजराइल के साथ आने का विरोध करता था, अब ईरान के बढ़ते प्रभाव के चलते सबसे प्रभावशाली बन गया है। इसके बदले, इस क्षेत्र ने सीरिया, इराक, और लेबनान जैसे देशों के समूहों और सरकारों के साथ कुछ गठबंधन बनाकर पूरे क्षेत्र में प्रभाव फैलाया है। इसे आमतौर पर प्रॉक्सी युद्ध कहा जाता है जिसमें ईरान बिना लड़े दुनिया को नियंत्रित कर सकता है। फिर भी, इससे इन क्षेत्रों में अस्थिरता और लगातार युद्ध भी होते हैं।

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर, इस युद्ध का प्रभाव बड़ी शक्तियों के बीच रिश्तों पर पड़ा है। अमेरिका अभी भी इजराइल के साथ है और उसे सैन्य और राजनीतिक समर्थन दे रहा है। इसके विपरीत, रूस और चीन जैसे अन्य देशों के साथ ईरान के दोस्ताना रिश्ते मजबूत हैं। इस मुद्दे की वजह से अंतरराष्ट्रीय रिश्ते कठिन हो जाते हैं और संघर्षों को सुलझाने पर आम सहमति बनाना मुश्किल हो जाता है। यह अंतरराष्ट्रीय और राष्ट्रीय दोनों प्रकार के संगठनों को प्रभावित करता है। कई बार, संयुक्त राष्ट्र को संघर्ष को सुलझाने में मुश्किल होती है क्योंकि उसके सदस्यों के बीच मतभेद होते हैं। शांति की कोशिशें और प्रस्ताव अक्सर कमजोर कर दिए जाते हैं।

इस संघर्ष का असर देशों की घरेलू राजनीति और इजराइल पर भी पड़ता है। दूसरे देशों से खतरे का जिक्र नेताओं द्वारा देश के मामलों को सुधारने और नीतियों पर ध्यान केंद्रित करने के लिए किया जाता है। इजराइल में चुनाव और शासन में सुरक्षा से जुड़ी बातें महत्वपूर्ण हैं। इजराइल पर युद्ध ईरानी राजनीतिक सोच के महत्वपूर्ण पहलुओं में से एक है। इसके अलावा, यह युद्ध अंतरराष्ट्रीय राजनीतिक स्थिरता पर भी असर डालता है। यह देशों के बीच तनाव बढ़ाता है, विदेश नीति के विकल्पों को

प्रभावित करता है, और अंतरराष्ट्रीय रिश्तों पर असर डालता है। देशों को सावधान रहना चाहिए कि वे इस लड़ाई में न पड़ें। जियोपॉलिटिक्स और आज की जियोपॉलिटिक्स की जटिलताएं और एक अधिक बंटी हुई दुनिया में एक बाइपोलर समझौता देखने को मिलता है।

### 3. मानवीय प्रभाव

ईरान और इजराइल के बीच संघर्ष से इंसान पर गंभीर असर पड़ता है। हालांकि दोनों पक्ष आमतौर पर सीधे टकराव से बचते हैं, यह लड़ाई उन क्षेत्रों में होती है जहाँ प्रॉक्सी एक्टर्स सक्रिय होते हैं। लेबनान में विस्थापन और अन्य स्थानों पर हिंसा, जानमाल के नुकसान और बेघर होने से जुड़े हैं। बेकसूर लोगों की जान का नुकसान तुरंत होता है। मिसाइलों की तुलना में तानाशाही असर तुरंत स्पष्ट होता है। एयरस्ट्राइक, मिसाइल हमले और सशस्त्र झड़पें अक्सर विस्थापन का कारण बनती हैं, जिससे नागरिक ढांचे, जैसे अस्पताल, स्कूल और घर, तबाह या क्षतिग्रस्त हो जाते हैं। इस प्रकार, लोगों को ज़रूरी सुविधाएं नहीं मिल पातीं। देशों में हिंसा कम करनी चाहिए। हजारों लोग शरणार्थी बनकर दूसरे देशों में जा बसते हैं, जिससे शरणार्थी संकट पैदा होता है। ऐसे विस्थापित लोग बेहद कठिनाइयों में जीते हैं। उनके पास संसाधनों की कमी होती है और स्वास्थ्य सेवा व शिक्षा जैसी सुविधाओं तक उनकी पहुंच बहुत कम होती है। मानसिक स्वास्थ्य भी युद्ध का एक बड़ा मुद्दा है। लगातार ट्रॉमा, जिसमें हिंसा और अन्य अनसियल चीजें शामिल हैं, लंबे समय तक मानसिक समस्याएं पैदा कर सकती हैं, खासकर बच्चों में। राजनीतिक और सुरक्षा मुद्दे भी मानवीय सहायता कार्यों में बाधा डालते हैं, क्योंकि वे संघर्ष क्षेत्र में रहने वाले लोगों के जीवन में डर, चिंता और तनाव छोड़ देते हैं। सहायता तक पहुंच की कमी और लगातार हिंसा राहत कार्यों को मुश्किल बना देती है। इससे राहत प्रयासों का असर कम होता है और समस्याएं बढ़ती हैं। युद्ध किसी भी क्षेत्र की अर्थव्यवस्था को प्रभावित करता है, जिससे बेरोजगारी और गरीबी बढ़ती है। परिवारों को आहार, पानी और आश्रय जैसी बुनियादी जरूरतें भी पूरी करने में दिक्कत होती है, और तबाही उच्च स्तर के हथियारों और तकनीक के उपयोग से छिपाई जाती है। मानवाधिकार और जवाबदेही के मुद्दे अक्सर इस परिदृश्य के प्रतिक्रिया के रूप में सामने आते हैं, जहां नागरिक क्षेत्रों में अक्सर संघर्ष का साया रहता है।

संक्षेप में, ईरान-इजराइल संघर्ष के सैन्य नतीजे दूरगामी हैं, और कई जानें प्रभावित हुई हैं। यह जियोपॉलिटिकल लड़ाइयों में मानव तत्व और लंबे समय तक पीड़ा से बचने के लिए शांतिपूर्ण समाधान की आवश्यकता को दर्शाता है।

### भविष्य की संभावनाएं

भविष्य में ईरान-इजराइल का झगड़ा कैसा होगा, यह अभी भी स्पष्ट नहीं है। कई हालात हैं जो आने वाले सालों में दुनिया की राजनीति को प्रभावित कर सकते हैं। एक संभावना यह है कि स्थिति पूरी तरह से युद्ध की ओर बढ़ जाए। जब दो मिलिट्री ताकतें आमने-सामने आती हैं, तो कई देश शामिल हो सकते हैं। इसका परिणाम अर्थव्यवस्था का ध्वस्त होना और अफरा-तफरी हो सकता है। ऐसी स्थिति का दुनिया की शांति और अर्थव्यवस्था पर बुरा असर पड़ेगा। दूसरी संभावना प्रॉक्सी वॉर की है। ईरान और इजराइल के बीच सीधे युद्ध के खतरे के चलते, वे सीधे लड़ाई नहीं करेंगे। बल्कि, वे सहयोगियों को समर्थन देंगे। साइबर वारफेयर और एयर स्ट्राइक जैसे अप्रत्यक्ष टकराव का सहारा लेंगे। ऐसे में युद्ध धीरे-धीरे बढ़ेगा, जिससे मध्य पूर्व में अस्थिरता फैल सकती है बिना बड़े युद्ध के तुरंत शुरू किए।

एक और संभावना एक कूटनीतिक समाधान है, लेकिन ईरान के साथ यह मुश्किल हो सकता है। वार्ताओं में सुलह, खासकर ईरान के न्यूक्लियर प्रोग्राम का उपयोग करके तनाव कम किया जा सकता है। इंटरनेशनल मध्यस्थता और स्थायी शांति बेहद ज़रूरी होगी। दुनिया के नेताओं के बीच संवाद स्थायी शांति लाने के लिए महत्वपूर्ण है। लड़ाई के स्वरूप में तकनीकी नवाचारों का भी योगदान होगा। साइबर वारफेयर, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और जोखिमों के बढ़ने की संभावना है। हाई-टेक मिसाइल सिस्टम युद्ध के स्वरूप को बदल सकते हैं और इसे अधिक खतरनाक बना सकते हैं।

क्षेत्रीय समायोजन प्रक्रिया भी विकसित हो सकती है। अन्य देशों के लिए इजराइल के साथ संबंध सामान्य हो सकते हैं, और ईरान भविष्य में अन्य देशों को मजबूत कर सकता है। ये बदलाव जियोपॉलिटिटी संतुलन और भविष्य की घटनाओं को प्रभावित करेंगे। ईरान या इजराइल में आंतरिक बदलाव हो सकते हैं, जो लड़ाई को प्रभावित करेंगे। विदेश नीति के विकल्प पर राजनीतिक नेतृत्व, जनता की इच्छा और ईरान-इजराइल की नैतिक स्थिति का असर हो सकता है, जिससे संघर्ष को कम करने का मौका मिल सकता है। कुल मिलाकर, ईरान-इजराइल लड़ाई का भविष्य अनिश्चित और जटिल है। जबकि युद्ध बढ़ने की प्रक्रिया संभव है, कूटनीति और संघर्ष समाधान के मौके भी मौजूद हैं। यह वैश्विक नेताओं और अंतरराष्ट्रीय समुदाय का कार्य है कि वे या तो युद्ध को बढ़ाएं या शांति की ओर ले जाएं।

### गहन विश्लेषण

ईरान-इजराइल संघर्ष केवल दो देशों की लड़ाई नहीं है। इसमें शक्ति, विचार और सुरक्षा जैसे कई मुद्दे शामिल हैं। ईरान-इजराइल संघर्ष एक समझौता है क्योंकि यह दर्शाता है कि ईरान और इजराइल जैसे देश एक-दूसरे पर भरोसा नहीं करते। जब एक देश अधिक सुरक्षित होने का प्रयास करता है, तो दूसरा देश इसे खतरा समझता है। इससे स्थिति और बिगड़ जाती है।

संयुक्त राज्य अमेरिका और रूस भी ईरान-इजराइल संघर्ष में शामिल हैं। उनके शामिल होने के अपने कारण हैं और यही कारण है कि संघर्ष का समाधान और भी कठिन हो जाता है। कभी-कभी देश अप्रत्यक्ष रूप से लड़ते हैं, जैसे कि अपने लिए लड़ने के लिए समूहों का उपयोग करना। इससे अंतरराष्ट्रीय संगठनों के लिए शांति बनाए रखना मुश्किल हो जाता है।

जब देश परमाणु समझौते जैसी बातों पर सहमत होते हैं, तो वे हमेशा अपने वादे पूरे नहीं करते। इससे एक-दूसरे पर भरोसा करना मुश्किल हो जाता है। ईरान-इजराइल संघर्ष दर्शाता है कि शक्तिशाली देश अक्सर लोगों की मदद करने की बजाय अपने हितों की अधिक परवाह करते हैं। यह युद्ध में घायल होने वाले लोगों के लिए बहुत बुरा है।

ईरान-इजराइल संघर्ष अभी भी जारी है। इससे पता चलता है कि लड़ाई कोई समाधान नहीं है। हमें एक-दूसरे से बात करनी होगी और यह समझने की कोशिश करनी होगी कि हम एक-दूसरे पर भरोसा क्यों नहीं करते। हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि हर कोई बातचीत में शामिल हो। कि हम सभी मिलकर इस क्षेत्र को सुरक्षित बनाने के लिए काम कर रहे हैं। अगर हम ऐसा नहीं करते हैं, तो हम जो भी समझौता करेंगे वह टिकेगा नहीं। ईरान-इजराइल संघर्ष चलता ही रहेगा।

### निष्कर्ष

ईरान और इजराइल के बीच चल रहा संघर्ष समकालीन वैश्विक राजनीति में एक महत्वपूर्ण मोड़ को दर्शाता है, जो अप्रत्यक्ष टकरावों से प्रत्यक्ष सैन्य टकराव की ओर बदलाव का संकेत दे रहा है। यह स्थिति दशकों से चली आ रही कुछ समस्याओं, जैसे वैचारिक शत्रुता, भू-राजनीतिक प्रतिद्वंद्विता और सुरक्षा संबंधी

दुविधाओं के कारण उत्पन्न हुई है। इस स्थिति ने मध्य पूर्व को अस्थिर कर दिया है और अंतरराष्ट्रीय शांति और सुरक्षा के लिए गंभीर खतरे पैदा कर दिए हैं।

यह संघर्ष दर्शाता है कि कैसे क्षेत्रीय विवाद तेजी से वैश्विक संकट में बदल सकते हैं, विशेषकर जब संयुक्त राज्य अमेरिका इस परिदृश्य का हिस्सा बन जाता है। ऊर्जा आपूर्ति श्रृंखलाओं में व्यवधान, महत्वपूर्ण समुद्री मार्गों के लिए चेतावनी और बढ़ते आर्थिक नुकसान आज के समय में वैश्वीकृत दुनिया की सह-संबंधी प्रकृति को उजागर करते हैं। वर्तमान स्थिति में अंतरराष्ट्रीय मंच और नीति निर्माण में संघर्ष समाधान और नागरिकों की सुरक्षा को प्राथमिकता देने की तत्काल आवश्यकता है।

कुछ संरचनात्मक असमानताएं और रणनीतिक शक्तियों के हित भी हैं, जिन्हें हमें वर्तमान स्थिति को समझने के लिए ध्यान में रखना चाहिए। युद्ध की यह वर्तमान स्थिति अनिश्चित बनी हुई है, जबकि कुछ संभावनाएं हैं कि सैन्य टकराव क्षेत्रीय तनाव या नाजुक राजनयिक समझौतों तक भी पहुंच सकता है। यदि स्थिति इसी तरह बनी रहती है, तो अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था में स्थिरता के लिए खतरा बना रह सकता है। वैश्विक राजनीति में स्थिरता बहाल करने और इन तनावों को रोकने की आवश्यकता है, जिसके लिए निरंतर राजनयिक जुड़ाव, बहुपक्षीय सहयोग और अंतरराष्ट्रीय मानदंडों का पालन जैसे उपाय अत्यंत आवश्यक हैं।

### सन्दर्भ सूची

1. पंत, पुष्पेश (2025): 'इक्कीसवीं सदी में अंतरराष्ट्रीय संबंध', राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
2. सिंह, अखिलेश्वर (2024): 'भारत की विदेश नीति: नए आयाम', हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय।
3. संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (UNSC): "वैश्विक सैन्य घटनाक्रम और मानवीय सहायता रिपोर्ट 2026", आधिकारिक दस्तावेज संख्या 402/2026।
4. विदेश मंत्रालय (MEA), भारत सरकार: "पश्चिम एशिया संकट और भारत की रणनीतिक स्थिति पर आधिकारिक प्रेस विज्ञप्ति 2026"।
5. विश्व बैंक : "युद्धकालीन अर्थव्यवस्था: तेल की कीमतों और वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला पर प्रभाव (2026)", वार्षिक आर्थिक समीक्षा।
6. अमर्त्य सेन: 'तर्क और न्याय', राजकमल प्रकाशन (वैश्विक राजनीतिक और आर्थिक न्याय के संदर्भ में)।
7. एमनेस्टी इंटरनेशनल: "2026 युद्ध और मानवाधिकारों का हनन: एक विशेष रिपोर्ट", डिजिटल आर्काइव।
8. ऑब्जर्वर रिसर्च फाउंडेशन (ORF): "ईरान-इजरायल संघर्ष और उभरता हुआ नया विश्व क्रम", शोध पत्र 2026।
9. बीबीसी हिंदी : 'ईरान की जवाबी कार्रवाई और आधुनिक ड्रोन युद्ध: एक विस्तृत विश्लेषण', मार्च 2026।
10. द हिंदू (हिंदी): 'वैश्विक राजनीति में गहराता संकट: भारत के लिए कूटनीतिक चुनौतियां', संपादकीय, अप्रैल 2026।
11. खन्ना, वी.एन. (2024): 'अंतरराष्ट्रीय राजनीति के सिद्धांत', विकास पब्लिशिंग हाउस।
12. संसद टीवी: 'विशेष चर्चा: मध्य-पूर्व में युद्ध और वैश्विक शांति की संभावनाएं', डिजिटल लाइब्रेरी आर्काइव 2026।
13. अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF): "वैश्विक मुद्रास्फीति और युद्धकालीन खाद्य सुरक्षा रिपोर्ट 2026।"
14. काउंसिल ऑन फॉरेन रिलेशंस (CFR): "ईरान की क्षेत्रीय शक्ति और इजरायल के साथ सैन्य समीकरण 2026।"